का उल्लेख करते हुए **एरिक फ्रॉम** (Erich Fromm) ने लिखा है, "**व्यक्ति और भी एकांकी व अकेला पड़ गया, वह अपने अधिकार के बाहर की अतिशय सबल शक्तियों के हाथों का साधन बन गया, वह एक व्यक्ति बन गया, किन्तु एक असमर्थ और असुरक्षित व्यक्ति।**"[1] इन सबके अतिरिक्त पूंजीवादी अर्थव्यवस्था अशान्ति को जन्म देने वाली होती है। आन्तरिक क्षेत्र में इसका परिणाम वर्ग-संघर्ष और अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में युद्ध व साम्राज्यवाद होता है।

इस प्रकार समाजवाद के अनुसार वर्तमान समय की पूंजीवादी व्यवस्था दोषपूर्ण, जर्जर, अन्यायी व शोषक है और सम्पूर्ण समाज के हित में इस अर्थव्यवस्था का अन्त कर दिया जाना ही श्रेयस्कर है।

(2) **समाजवाद एक प्रजातान्त्रिक विचारधारा है**—समाजवाद के सम्बन्ध में प्रमुख बात यह है कि यह एक प्रजातान्त्रिक विचारधारा है। अनेक बार समाजवाद को साम्यवाद का पर्यायवाची मान लिया जाता है, जो नितान्त भ्रमपूर्ण है। पूंजीवाद के विरोध में परस्पर सहमत होते हुए भी समाजवाद और साम्यवाद परस्पर नितान्त विरोधी विचारधाराएं हैं। **इबन्सटीन** (Ebenstein) के शब्दों में, "**ये (समाजवाद और साम्यवाद) विचार और जीवन के दो नितान्त विरोधी ढंग हैं, उतने ही विरोधी जितने कि उदारवाद और सर्वाधिकारवाद।**"[2] इन दोनों विचारधाराओं में प्रमुख भेद साधनों के सम्बन्ध में देखा जा सकता है। साम्यवाद पूंजीवाद के अन्त हेतु हिंसक साधनों को अपनाने के पक्ष में है, किन्तु समाजवाद वांछित परिवर्तन प्रजातान्त्रिक संवैधानिक साधनों से ही लाने का इच्छुक है। समाजवाद प्रजातन्त्रवादी विचारधारा है, साम्यवाद सर्वाधिकारवादी।

(3) **समाजवाद समाज की आंगिक एकता पर बल देता है**—समाजवाद का आधारभूत विचार यह है कि व्यक्ति कोई अकेला प्राणी नहीं है वरन् वह समाज के दूसरे व्यक्तियों से उसी प्रकार सम्बन्धित है, जिस प्रकार शरीर के अंग-प्रत्यंग परस्पर सम्बन्धित होते हैं। इसलिए ममाजवाद का सिद्धान्त है कि समाज को एक भीड़ या समूह मात्र न मानकर उसे एक इकाई माना जाए और व्यक्ति को समाज का एक अंग मानते हुए ही उस पर विचार किया जाए।

(4) **समाजवाद प्रतियोगिता के स्थान पर सहयोग को प्रतिष्ठित करता है**—व्यक्तिवादियों के विपरीत समाजवादी प्रतियोगिता को एक बहुत बड़ा दोष मानते हैं और उनका विचार है कि इससे केवल धनिक वर्ग को ही लाभ होता है। प्रतियोगिता में मजदूर पूंजीपतियों का मुकाबला नहीं कर पाते, इसलिए बहुत थोड़े मूल्य पर उन्हें अपना श्रम बेचना पड़ता है। इसके अतिरिक्त प्रतियोगिता के कारण प्रत्येक व्यवसायी अपनी चीजों को इतनी सस्ती बेचना चाहता है कि उनकी श्रेष्ठता बिल्कुल नष्ट हो जाती है और अनेक बार किन्हीं वस्तुओं का अत्यधिक मात्रा में उत्पादन हो जाने के कारण देश की सामग्री का भी अपव्यय होता है। समाजवाद इस प्रतिस्पर्द्धा के स्थान पर सहयोग की प्रतिष्ठा करना चाहता है। **डॉ. हेडन गेस्ट** का कहना है कि "**मेरे विचार से समाजवाद का अर्थ स्थानीय, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय सभी क्षेत्रों में प्रतियोगिता के स्थान पर सहयोग को प्रतिष्ठित करना है।**"[3]

(5) **समाजवाद का ध्येय समता है**—समाजवाद वर्तमान सामाजिक व्यवस्था में विद्यमान असमानता का अत्यन्त विरोधी है और वह नवीन समाज का निर्माण ऐसे सिद्धान्तों के आधार पर करना चाहता है कि उसमें वर्तमान समय में पायी जाने वाली गम्भीर असमानता कम-से-कम हो जाए। योग्यता के अन्तर को तो समाजवादी भी स्वीकार करते हैं और वे भी यह मानते हैं कि पूर्ण समानता अनुचित, अनावश्यक और असम्भव है, किन्तु साथ ही उनका लक्ष्य एक ऐसे वातावरण का निर्माण करना है, जिसमें प्रत्येक को उन्नति के समान अवसर प्राप्त हो सकें और जहां तक सम्भव हो सके, मनुष्य, मनुष्य के बीच ऐसी अवस्थाएं न रहें कि '**कुछ लोग बिना काम किए ही जीवित रहें और कुछ लोग काम करने पर भी न जी सकें।**'

(6) **समाजवाद उत्पादन के साधनों पर सामाजिक स्वामित्व के पक्ष में है**—पूंजीवादी व्यवस्था का घोर विरोधी होने के कारण समाजवाद भूमि और उद्योग पर वैयक्तिक स्वामित्व के अन्त की मांग करता है और उत्पादन के समस्त साधनों पर सामाजिक स्वामित्व स्थापित करना चाहता है। समाजवादियों के अनुसार, "**वैयक्तिक**

---

1 Fromm's speech at a Political Conference